आरती श्री अन्नपूर्णा देवी की

बारम्बार प्रणाम मैया, बारम्बार प्रणाम।
जो ध्यावे तुम्ही अम्बिके ,कहाँ उसे विश्राम। ।
अन्नपूर्णा देवी नाम तिहारो,लेत होत सब काम।
प्रलय युगान्तर और जन्मान्तर,कालान्तर तक नाम। ।
सुर सुरो की रचना करती, कहाँ कृष्ण कहाँ राम।
चूमहि चरण चतुर चतुरानन,चारू चकधर श्याम। ।
चन्द्र–चूड़ चन्द्रानन चाकर,शोभा लखहि सलाम।
देवी– देव दयनीय दशा मे, दया दया तब जामा। ।
त्राहि– त्राहि शरणागत वत्सल, शरणरूप तव धाम।
श्री ही श्रद्धा श्री ऐ विद्या,श्री कली कमला काम।
कांति भ्रांतिमयी कांति शांति सयोवर देतू निष्काम।